ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 9, Issue 8, August 2019 Impact Factor 5.132 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

उत्तर मध्यकाल में संगीत

Dr. Vivek Ranga
Associate Professor of (Music Vocal)
Govt. College for Women, Karnal

ABSTRACT

इस काल की अवधि आठवीं शताब्दी से 18 वीं शताब्दी तक मानी जाती है। कुछ विद्वान मध्यकाल को 11वीं शताब्दी में मुसलमानों के आगमन के समय से ही मानते हैं। मुसलमानों के आगमन के साथ भारतीय संगीत में परिवर्तन आने लगा। उससे पूर्व 9 वीं शताब्दी से 12वीं शताब्दी तक भारतीय संगीत में अच्छी उन्नति हुई। रियासतों में संगीत को बड़ा प्रोत्साहन मिला प्रत्येक रियासत में अच्छे अच्छे संगीतज्ञ रहते थे जिनको राज्य की ओर से अच्छी तनख्वाह मिलती थी। भारतीय संस्कृति और सभ्यता 11वीं शताब्दी के बाद से काफी प्रभावित हुई मुसलमानों के अधिकतर आक्रमण उत्तरी भारत में हुए जिससे हम अपना प्राचीन संगीत खोकर संगीत का नया रूप प्राप्त कर बैठे। इसके विपरीत दक्षिण भारत मुसलमानों के प्रभाव से बचकर अपने प्राचीनतम संगीत को सुरक्षित रख पाया। इसके बाद ही भारत की उत्तरी तथा दक्षिणी संगीत पद्धतियां अलग-अलग विकसित होने लगी। इस समय प्राचीन संगीत रचना प्रबंधों का प्रचार समाप्त होने लगा और उसका स्थान ध्रुपद, धमार, ख्याल, टप्पा, तराना तथा ठुमरी आदि ने ले लिया।

प्रबन्ध गायन शैली:-

भारतीय संगीत में प्रबन्ध एक प्राचीन गायन शैली है। भरतकाल में ध्रुवगीत का अस्तित्व था और इससे पूर्व शुद्ध गाथा, पाणिका नायक गीत शैलियों थीं । मतंग के समय में प्रबन्ध गीत , शैली पूर्णरूप से अस्तित्व में आ चुकी थी। यह सर्वथा सत्य है कि आधुनिक काल की हिन्दुस्तानी और कर्नाटकी संगीत पद्धतियों में जो लिपिबद्ध रचनाएँ हैं, वे प्राचीनकाल के प्रबन्धों से मिलती हैं। प्रबन्ध शब्द अत्यन्त प्राचीन है। शास्त्रों में गायन के अनिबद्ध और निबद्ध भेद दिए गए हैं-

अनिबद्धः

इसका अर्थ ताल से मुक्त अर्थात् आलाप जैसा गायन है।

निबद्धः- जो ताल में बँधा हुआ होता है, उसे निबद्ध कहा जाता है।

प्रबंध एक प्राचीन गायन शैली है अतः प्रबंध गायन शैली के बाद मध्यकाल में ध्रुपद धमार , ख्याल, टप्पा, तराना तथा ठुमरी आदि गायन शैलियां प्रचार में आई।

मध्यकाल में अनेक ग्रंथों की रचना हुई। जिनके नाम निम्नलिखित है पंडित सारंगदेव कृत्य संगीत रत्नाकर , लोचन कृत राग तरंगिणी, रामामात्यकृत स्वर मेल कलानिधि, मानसिंह रचित मान कुतुहुल, पुंडरीक विट्ठल रचित सदरांग चंद्रोदय, राग माला, राग मंजरी, नृतन निर्णय, सोमनाथ कृत राग बोध दामोदर कृत संगीत दर्पण, अहोबल कृत संगीत पारिजात , हृदयनारायणदेव कृत हृदय कोतुक और हृदय प्रकाश , श्रीनिवास कृत राग तत्व विबोध मोहम्मद रजा कृत नगमाते आशफी इत्यादि ।

संगीत रत्नाकरः- इस ग्रन्थ का रचनाकाल 1210 से 1247 ई० के मध्य का है। इसके सात अध्याय हैं , इसी कारण इसे सप्ताध्यायी भी कहते हैं। इस ग्रन्थ में प्राचीन समय में प्रचलित संगीत का विस्तृत वर्णन है। संगीत रत्नाकर में वर्णित सात अध्याय-

स्वराध्यायः- इस अध्याय में नाद की परिभाषा , नाद की उत्पत्ति और उसके भेद , स्वर, ग्राम मूर्छना, वर्ण, अलंकार और जाति आदि का विस्तारपूर्वक वर्णन है।

रागाध्यायः- इसमें रागों का 10 भागों में वर्गीकरण मिलता है- ग्राम राग , उपराग, राग, भाषा, विभाषा, अंतरभाषा, रागांग, भाषांग, क्रियांग, उपांग का वर्णन किया है। 264 रागों का वर्णन किया है।

प्रकीर्णाध्याय- इसमें वाग्गेयकार एवं गायक के गुण-दोष , गीत के गुण , गमक, कुतुप आदि का विवेचनात्मक अध्ययन किया गया है।

प्रबन्धाध्यायः इस अध्याय में देशी मार्गीय संगीत , गांधर्व गान, निबद्ध-अनिबद्ध, प्रबन्ध वस्तु, रूपक आदि पर प्रकाश डाला है। प्रबन्धों के 75 प्रकार का उल्लेख किया है

तालाध्यायः- इसमें मार्ग ताल, गीत तथा देशी ताल के अंतर्गत 121 तालों का परिचय दिया है।

वाद्याध्याय- इसमें तत, वितत, सुषिर, अवनद्ध, घन वाद्यों का परिचय, उनकी वादन-विधि और वादकों के गुण-दोषों का वर्णन किया है।

नृत्याध्याय- इसमें नाट्य, नृत्य की व्याख्या तथा शरीर के विभिन्न अंगो द्वारा किए जाने वाले अभिनय पर प्रकाश डाला गया है।

13 वीं शताब्दी के बाद से 18 वीं शताब्दी तक फारसी संगीत का भारतीय संगीत में मिश्रण हुआ और फारसी और भारतीय संगीत का यह मिश्रित रुप बहुत विकसित हुआ। इस समय संगीत प्रेमी मुसलमान बादशाहों ने संगीत तथा संगीतज्ञों को अपने दरबारों में आश्रय दिया।

अलाउद्दीन खिलजी, अमीर खुसरो, गोपाल नायक द्वारा संगीत क्षेत्र में काफी काम हुआ। अमीर खुसरो , अलाउद्दीन के दरबार में कवि तथा संगीतज्ञ था। उन्होंने कई नवीन गायन शैलियों का आविष्कार किया। रागों में उन्होंने पूर्वी , यमन रात की पूरिया , सरपर्दा तालों में सवारी , पश्तो, झूमरा, आड़ा चारताल, सूलफाक, वाद्यों में सितार, तबला, ढोल तथा गायन शैलियों में कव्वाली , ख्याल, तराना, गजल, सोहला आदि आविष्कार किए।

लोचनकृत रागतरंगिनी:- मिथिला जिले के लोचन ने अपने ग्रन्थ में 12 थाटों से 75 रागों का वर्गीकरण किया है। रागों को निर्धारित समय पर गाए जाने पर भी अपना मत दिया है। लोचन द्वारा रचित सर्व-संग्रह भी है। इन्होंने भी अपना शुद्ध थाट काफी माना है।

रामामात्यकृत स्वरमेल कलानिधिः - रामामात्य दक्षिणी पद्धति के ग्रन्थकार हैं। मध्यकाल का पहला दक्षिणी ग्रंथ है। इस ग्रंथ के पाँच प्रकरण है-

1. उपोदघात प्रकरण, 2 स्वरप्रकरण 3. वीणा प्रकरण 4. मेल प्रकरण 5. राग प्रकरण ।

मानसिंह रचित मानकुतूहल (1486-1518 ई०):- राजा मानसिंह ने उच्चकोटि के गायक-वादकों की सहायता से रागों की संख्या तथा उनके प्रकार विस्तारपूर्वक व्याख्या सहित लिपिबद्ध करके मानकुतुहल की रचना की, जिसका फारसी अनुवाद 1673 ई० में संगीत 'दर्पण' के नाम से फकीरुल्ला द्वारा हुआ।

तत्पश्चात् अकबर (1556-1605 ई.) के शासन काल में संगीत की बहुत उन्नति हुई। अकबर स्वयं बड़ा संगीत प्रेमी था 'आइने अकबरी' के अनुसार अकबर के दरबार में तानसेन प्रमुख गायक के साथ छत्तीस अन्य संगीतज्ञ थे। तानसेन ने अनेक राग जैसे मियों की सारंग , मियों मल्हार, मियाँ की तोड़ी , दरबारी कान्हड़ा आदि की रचना की।

ग्वालियर के राजा मानसिंह तोमर भी इस समय संगीत के अच्छे विद्वान थे। वे ध्रुपद गायन के प्रचारक थे। उन्होंने स्वयं भी कुछ रूपदों की रचना की जो आधुनिक समय में प्रचार में हैं। इसके अतिरिक्त उस समय में गोस्वामी तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई आदि भक्त कवियों ने भी संगीत का काफी प्रचार किया। इसके दक्षिणी भारत का एक प्रसिद्ध संगीतज्ञ पुण्डरीक विट्ठल भी हुआ जिसने संगीत में राग माला , राग मंजरी, सद्राग-चंद्रोदय तथा नर्तन-निर्णय नामक ग्रंथों की रचना की।

पुण्डरीक विट्ठल के ग्रंथ (1600 ई०) :-

1. सद्रांगचन्द्रोदय, 2. राग माला, 3. राग मंजरी, 4. नर्तन निर्णय ।

सद्रागचन्द्रोदय में श्रुतियों पर स्वर स्थापना का वर्णन किया है। इन्होंने सात शुद्ध , सात ही विकृत स्वर माने हैं।

2. **राग माला** में रागों के तीन वर्ग बताए हैं , जिनमें पुरुष राग, फिर प्रत्येक की पाँच-पाँच स्त्री राग और पाँच-पाँच पुत्र राग रागों के स्वर बताने के साथ-साथ राग चित्र और गायन समय को भी स्पष्ट किया गया है।

3. **राग मंजरी** में शुद्ध विकृत स्वरों की व्याख्या की है। उनकी तुलना दक्षिणी पद्धति से की है 20 थाटों के स्वरों का निरूपण किया है।

4. **नर्तन निर्णय** नृत्यकला से सम्बन्धित है।

जहाँगीर (1604 से 1627) के दरबार में संगीत की विशेष उन्नति न हो सकी। क्योंकि वह स्वयं संगीत प्रेमी न था लेकिन उस समय में पं. सोमनाथ ने दक्षिणी पद्धति पर एक पुस्तक राग-विबोध नाम से लिखी उतरी हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति पर पं. दामोदर मिश्र ने संगीत 'दर्पण' नामक पुस्तक का लेखन किया।

सोमनाथ कृत 'रागविबोध' (1610 ई०):- 22 श्रुतियों पर सात शुद्ध स्वरों के साथ 15 विकृत स्वरों की स्थापना का वर्णन किया है दामोदर कृत संगीत दर्पण (1025 ई०) दो अध्याय- 1. स्वराध्याय, 2. रागाध्याय

1. **स्वराध्याय** में नादोत्पत्ति, श्रुति, स्वर, ग्राम मूर्च्छना तथा 32 कूट तानों का वर्णन है। इसी

अध्याय में स्वर साधारण, वर्ण, अलंकार आदि का वर्णन किया है।

2. रागाध्याय में राग के तीन भेद शुद्ध छायालग और संकीर्ण व रागाग, भाषाग, क्रियांग और उपाग, राग-रागनियों के ध्यान, गायन समय स्वरूप आदि है।

अहोबल कृत संगीत परिजात (1650 ई०) :- इस ग्रंथ के सात प्रकरण है 1 मंगलाचरणम, 2. स्वर प्रकरणम, 3 ग्राम प्रकरण, 4. मूर्च्छना प्रकरणम, 5. वर्ण, अलंकार प्रकरणम, 6. जाति प्रकरण 7. राग प्रकरण | अहोबल ने वीण के दण्ड पर तार की लम्बाई और उनकी आन्दोलन संख्या के अनुसार स्वरों की स्थापना की है।

हृदयनारायणदेव कृत हृदय कौतुक और हृदय प्रकाश (1660) :- परिजात ग्रंथ के अनुसार वीणा की तार पर स्वरों की स्थापना की है। हृदयरामा राग की रचना की है। हृदयरामा नवीन ठाठ रखा है।

भावभट्ट रचित ग्रंथ- अनूप संगीत विलास अनूप संगीत रत्नाकर और अनूपांकुश ।

पं. व्यंकटमुखी कृत चतुदण्डिप्रकाशिका (1660):- (दक्षिण ग्रंथ) पं० व्यंकटमुखी ने सप्तक के 12 स्वरों से 72 थाटों की रचना की और एक थाट से 484 रागों की उत्पत्ति सिद्ध की पं० व्यंकटमुखी ने पाँच विकृत स्वरों को मान्यता दी है, वे हैं- साधारण गंधार, अंतर गंधार वराली मध्यम, कैशिक निषाद व काकली निषाद ।

इसके बाद (1657 से 1707) ई. में औरंगजेब का समय आया । बादशाह औरगंजेब संगीत का कट्टर विरोधी था उसने संगीत को जड़ से समाप्त करने के लिए संगीतज्ञों के कई वाद्य समाप्त किए। उन्हें संगीत छोड़ने के लिए बाध्य किया गया। उसका कहना था कि संगीत के वायों को इतना गहरा दफनाया जाए कि पुनः उनकी आवाज न सुनाई पड़े। लेकिन फिर भी संगीत तथा संगीतज्ञों का संगीत के प्रति प्रेम छुप कर एकांत में पनपा । इस समय में पं. वेंकट मुखी द्वारा चतुदंडीप्रकाशिका ग्रंथ की रचना हुई। भाव भट्ट ने तीन ग्रंथ अनूप संगीत रत्नाकर' अनूप विलास तथा अनूपाकुश' लिखी।

(1719 से 1748) मुहम्मदशाह रंगीला संगीत का बड़ा प्रेमी शासक था। उसके दरबार में सदारंग और अदारंग दो प्रमुख गायक जिन्होंने ख्याल की रचना की और भारतीय संगीत परंपरा में एक नया अध्याय जोड़ा। इसी समय में लखनऊ के गुलाम नबी शोरी मियाँ ने टप्पा नामक गायन शैली का आविष्कार किया।

श्रीनिवास कृत राग तत्त्व विबोधः - 18वीं शताब्दी में श्रीनिवास ने राग तत्त्व विबोध की रचना की। प० अहोबल की भांति ही शुद्ध विकृत स्वरों की स्थापना यीणा के तार की सहायता से की है। रागाध्याय का सारा विवरण संगीत परिजात से लिया गया है।

मुहम्मद रजा कृत नगमाते आसफी (1883 ई०) :- इस ग्रंथ की मुख्य विशेषता यह है कि इसमें पहली बार बिलावल को शुद्ध ठाठ यानि सप्तक के रूप में माना गया है।

सवाई प्रतापसिंह कृत संगीतसार (1779-1804 ई.) तुलाजीराव भोंसले कृत संगीत सारामृत (1783) इन्होंने राग वर्गीकरण के लिए 21 थाट माने।

कृष्णानन्दव्यास कृत 'संगीत राग कल्पद्रुम' (1842 ई०):- इसमें उस समय के हजारों छपद, ख्याल व गीत बिना स्वरलिपि के दिए हैं।

संदर्भ सूची

1. डॉक्टर मीरा, संगीत शिक्षण, पृष्ठ संख्या 31 से 35
2. डॉक्टर क्यूटी, संगीत सारस्वत, पृष्ठ संख्या 69.
3. डॉ अशोक कुमार, यमन संगीत रत्नावली, पृष्ठ संख्या 349
4. https://saptswargyan.in
5. https://www.indiaolddays.com